Development Alternatives

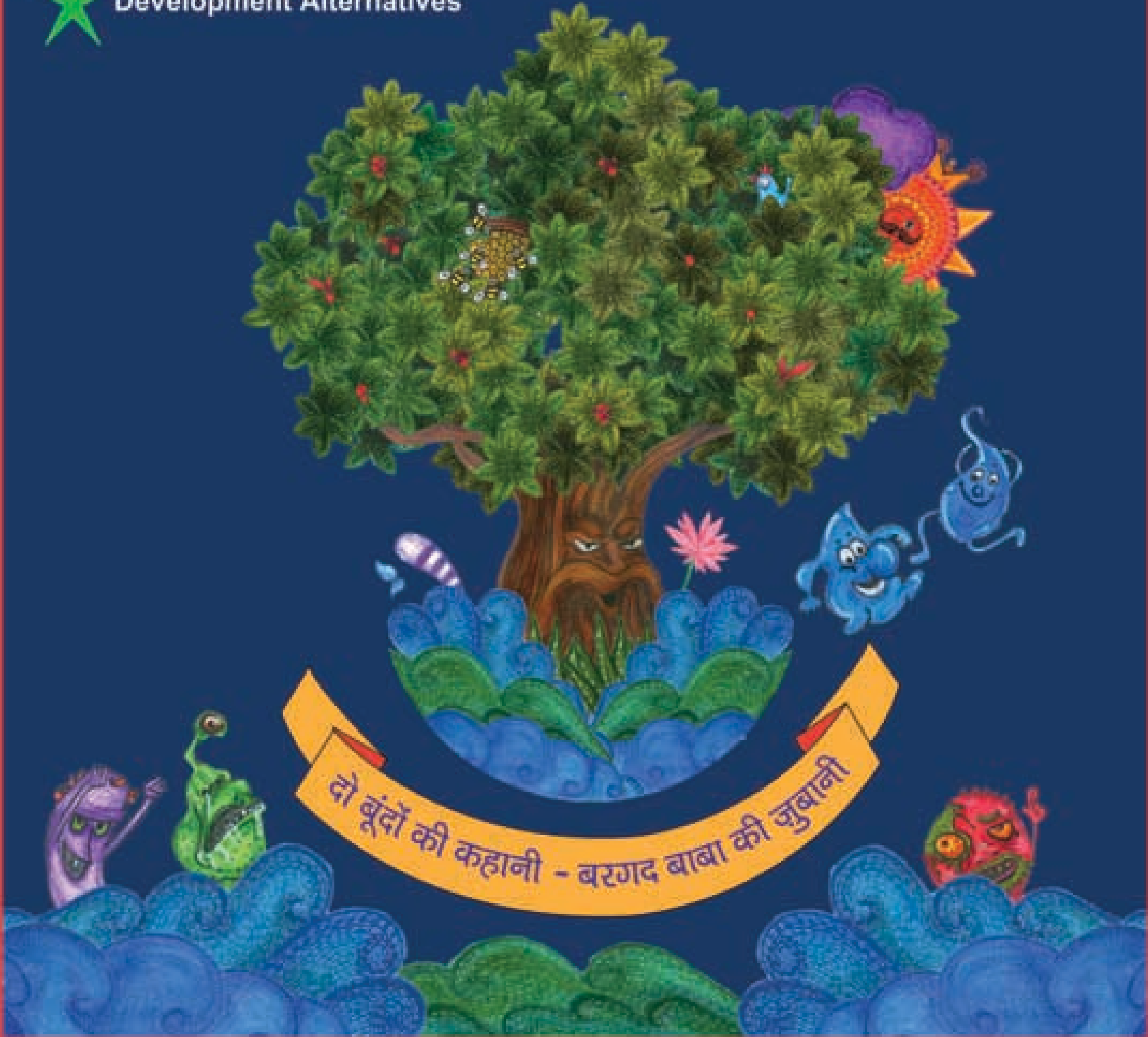

डेवलपमेंट ऑल्टरनेटिव्स

1983 में स्थापित डेवलपमेंट ऑल्टरनेटिव्स, गरीबी कम करने और पर्यावरण को पुर्नजीवित करने के लिए पर्यावरण समाधानों की खोज करता है और उन्हें लोगों को प्रदान करता है। यह सतत् विकास और हाशिए पर रह रहे समुदायों के सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख परिवर्तन को प्रेरित करने में अग्रणी है।

संगठन पिछले 32 वर्षों से, आश्रय, पानी और ऊर्जा के क्षेत्र में सतत् हरित आजीविका बनाने के लिए स्वच्छ हरित प्रौद्योगिकी की खोज में कार्यरत है। संस्था ने अब तक 20 सेअधिक तकनीकी समाधान विकसित किए हैं जिनसे लगभग 1 लाख लोगों को आजीविका मिली है तथा 5 लाख से अधिक लोग लाभान्वित हुए हैं।

दो बूंदों की कहानी - बरगद बाबा की ज़ुबानी

प्रथम संस्करण 2014
© डेवलपमेंट ऑल्टरनेटिव्स
चित्रांकन : वन्दना सिंह
लेखक : नरेन्द्र सिंह

दो बूंदों की कहानी - बरगद बाबा की जुबानी

कहानी के पात्र

हमारे बुजुर्ग: बूढ़ा बरगद बाबा

हमारे हीरो: पानी की बूंदें और उनके साथी

हमारे विलन: गब्बर और उनके साथी

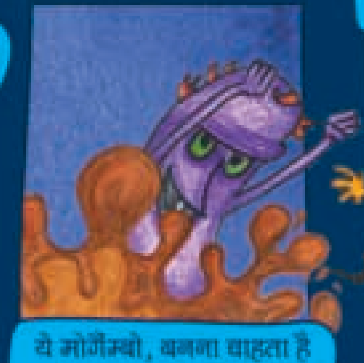

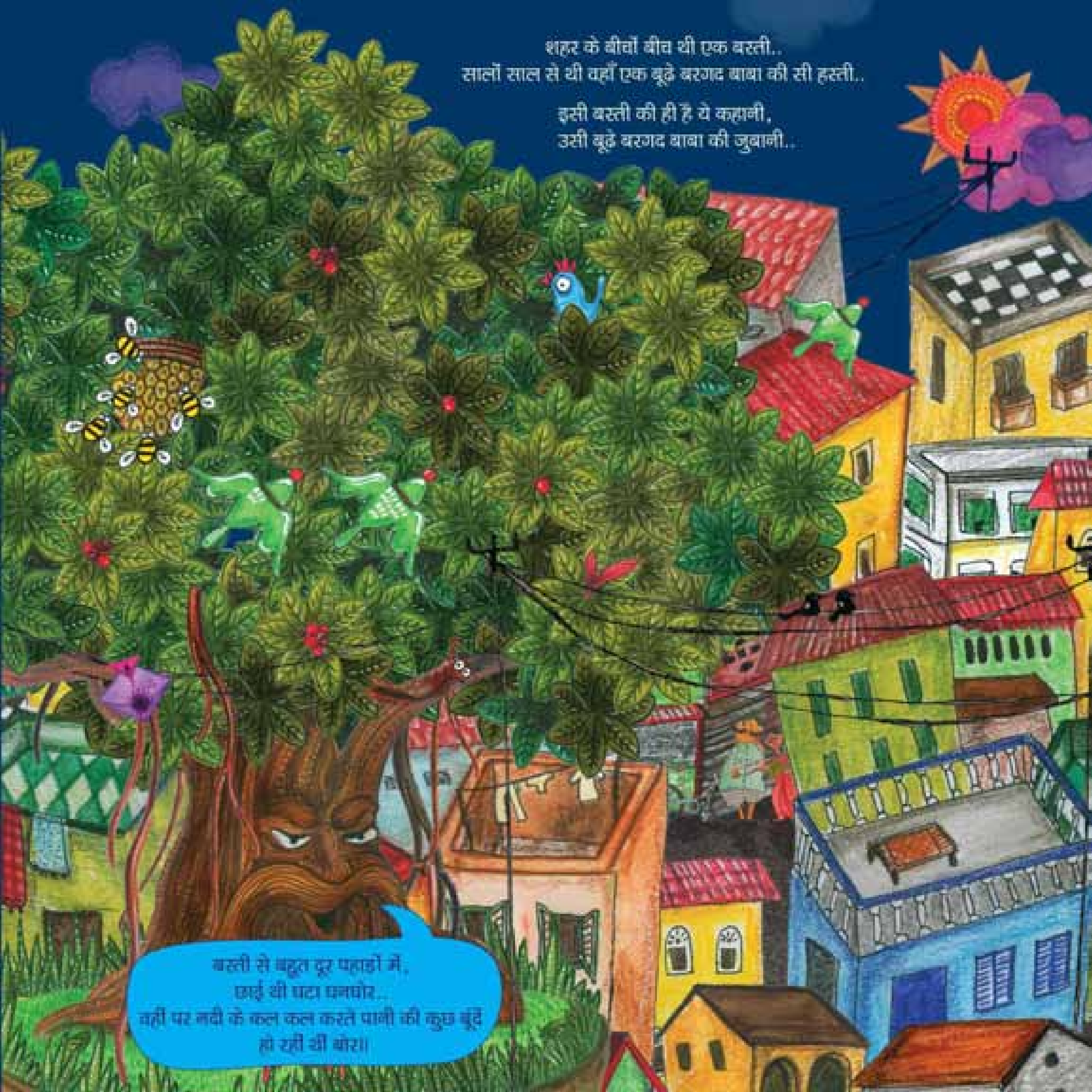
शहर के बीचों बीच थी एक बस्ती..
सालों साल से थी वहाँ एक बूढ़े बरगद बाबा की सी हस्ती..
इसी बस्ती की ही है ये कहानी,
उसी बूढ़े बरगद बाबा की जुबानी..
बस्ती से बहुत दूर पहाड़ों में,
छाई थी घटा घनघोर..
वहीं पर नदी के कल कल करते पानी की कुछ बूंदें
हो रही थी बोर।।

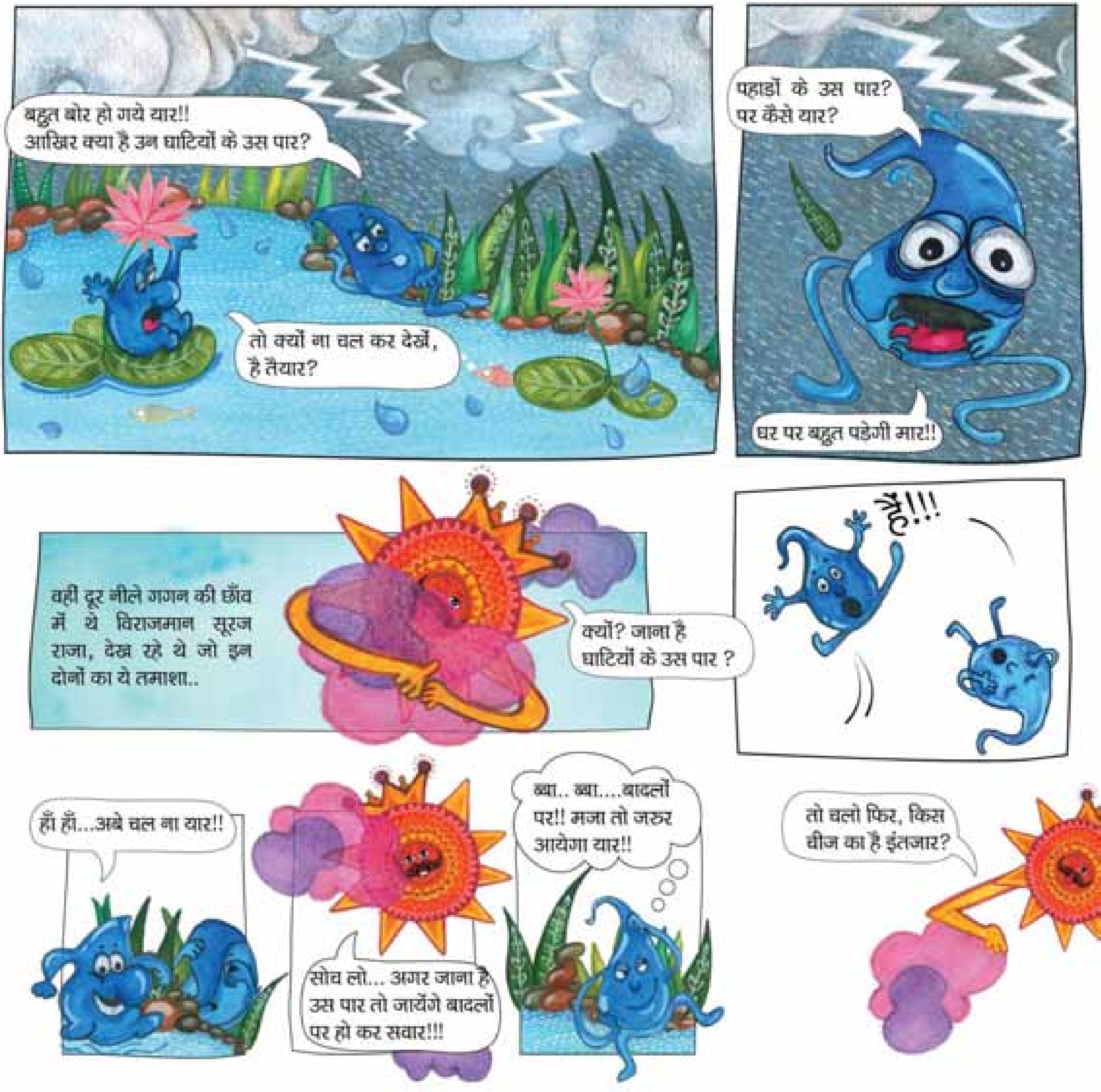
बहुत बोर हो गये यार!! आखिर क्या है उन घाटियों के उस पार?
तो क्यों ना चल कर देखें, है तैयार?
पहाड़ों के उस पार? पर कैसे यार?
घर पर बहुत पड़ेगी मार!!
वहीं दूर नीले गगन की छाँव में थे विराजमान सूरज राजा, देख रहे थे जो इन दोनों का ये तमाशा..
क्यों? जाना है घाटियों के उस पार ?
है!!!
हाँ हाँ....अबे चल ना यार!!
सोच लो... अगर जाना है उस पार तो जायेंगे बादलों पर हो कर सवार!!!
ब्बा.. ब्बा....बादलों पर!! मजा तो जरूर आयेगा यार!!
तो चलो फिर, किस चीज का है इंतजार?

तभी सूरज राजा ने कर डाली इतनी गर्मी,
बूंदों में आ गई भाप की सी नर्मी..
बन कर भाप उड़ने लगे वो गगन में..
अरे वाह!!!
मजा आ गया!!
वो देख क्या नजारा है!!
और की सवारी बादलों की
घटा घनघोर!!
ले चले हमें किस ओर?
दूर पहाड़ों के पार है एक बस्ती,
धरती और जनता वहाँ तुम जैसे
साफ पानी को तरसती..
वहीं पर हमें है जाना और तुम्हें है
हमें बरसाना..
उड़ चले लेकर उनको, काले बादल..
और बरसा डाला, जो है हमारे बूढ़े बरगद
बाबा और प्यासी धरती का आँचल..
रिम झिम बरसे वो सभी,
कोई अटकी बूढ़े बाबा की शाखाओं में
तो कोई समा
गया सूखी
धरती में..
नाचने लगे वो सब झूम झूम,
तभी ....

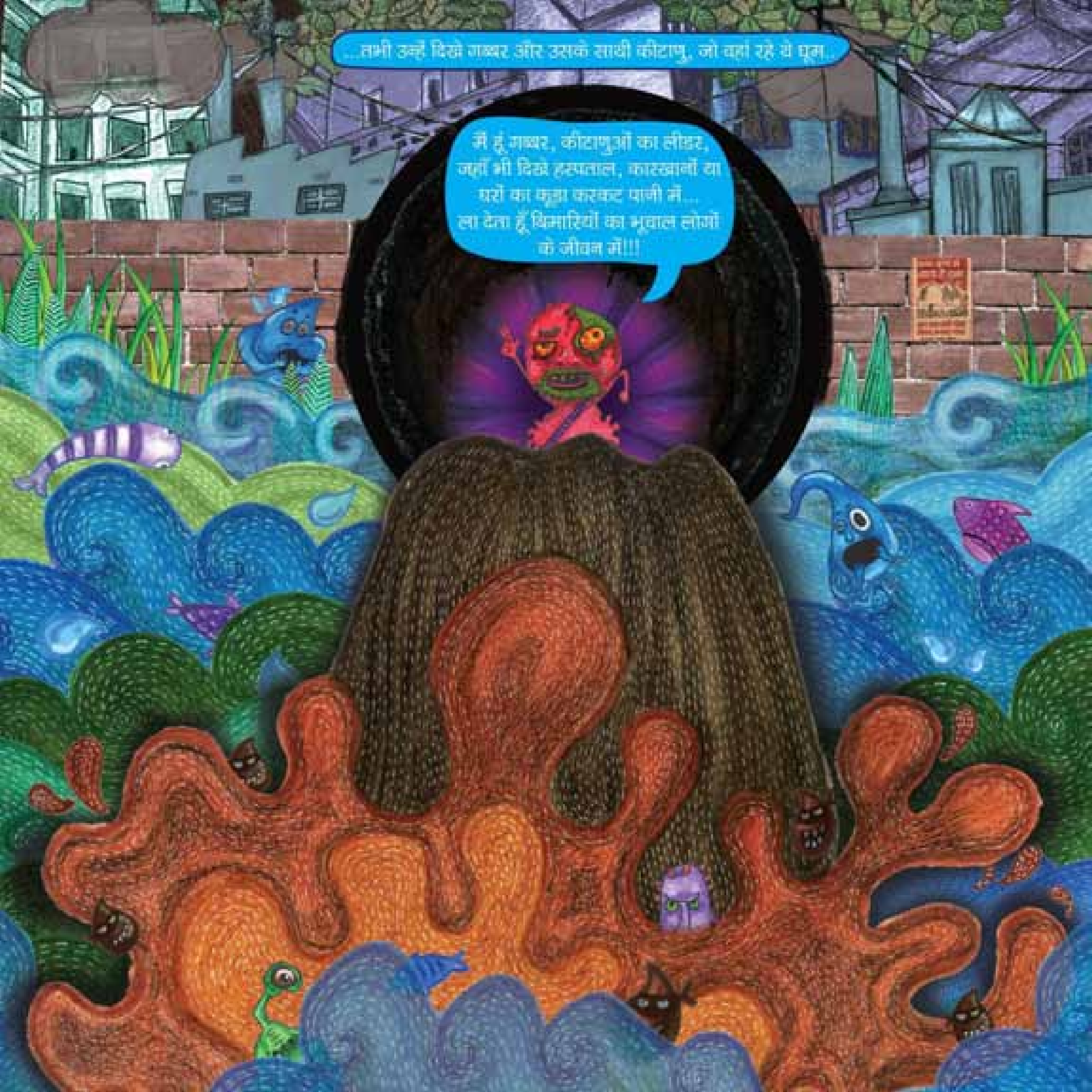
...तभी उन्हें दिखे गब्बर और उसके साथी कीटाणु, जो वहां रहे थे घूम...
मैं हूं गब्बर, कीटाणुओं का लीडर,
जहाँ भी दिखे हस्पताल, कारखानों या
घरों का कूड़ा करकट पानी में...
ला देता हूँ बिमारियों का भूचाल लोगों
के जीवन में!!!

बस यही??!!
मोगैम्बो खुश हुआ!!
खुश तो बहुत हो तुम... पर तुम्हारा क्या है अवगुण?
शाबाश!!
क्या कहिये फ़ितरत हमारी
फैलाते हम केवल बीमारी
और ये तुच्छ पानी की बूंदें!!!
इन से क्या टक्कर हमारी
हा हा हा

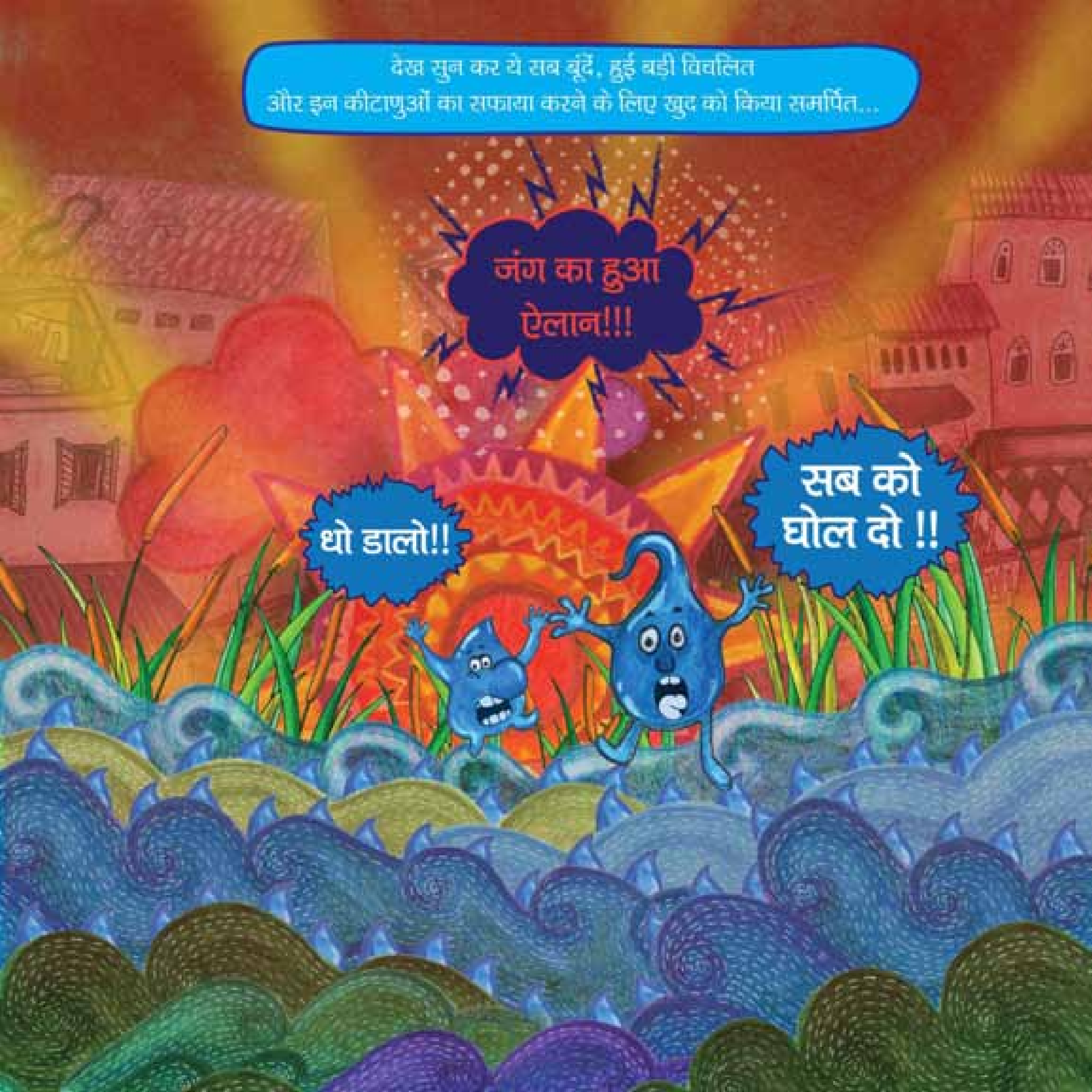
देख सुन कर ये सब बूंदें, हुई बड़ी विचलित
और इन कीटाणुओं का सफ़ाया करने के लिए खुद को किया समर्पित...
जंग का हुआ ऐलान!!!
धो डालो!!
सब को घोल दो !!

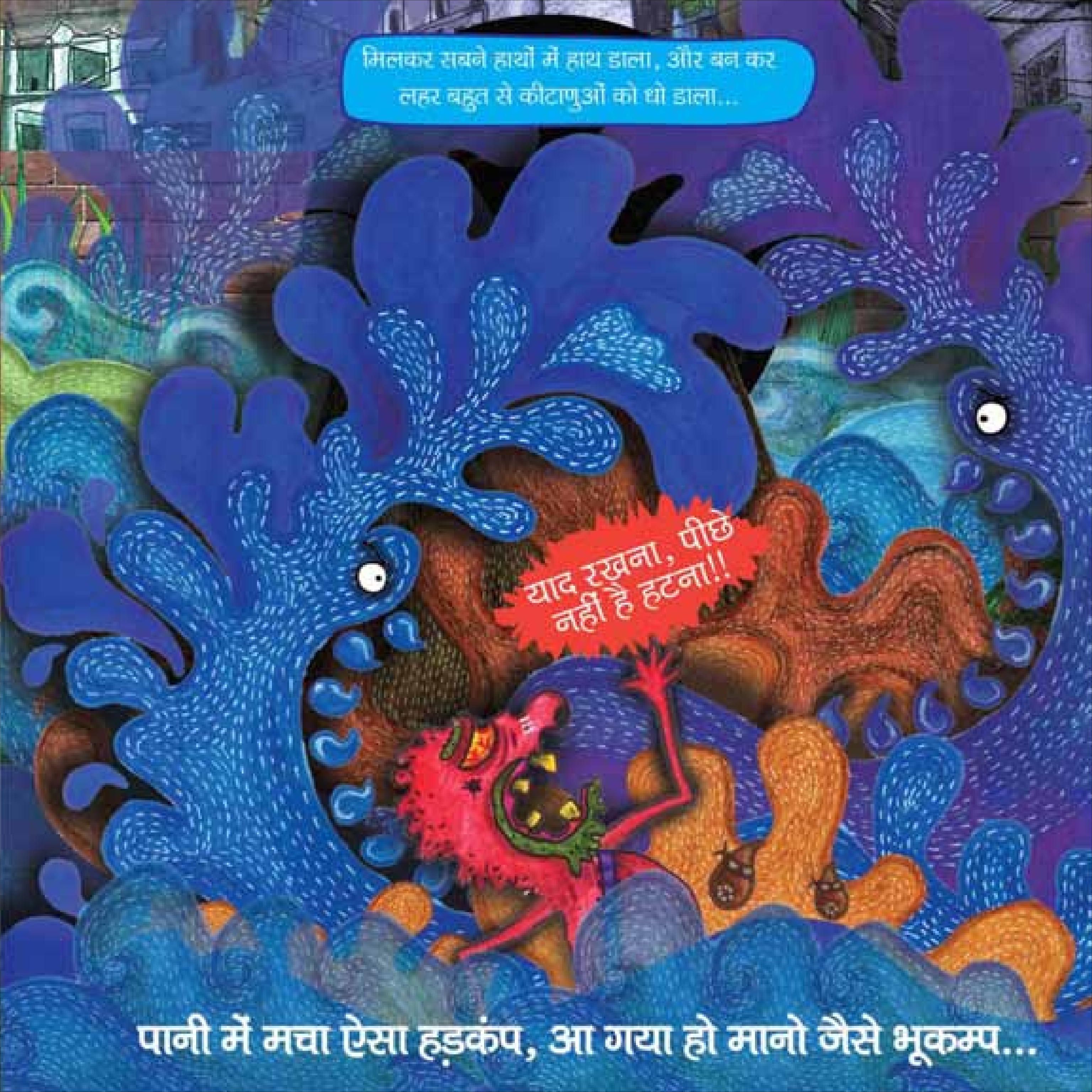
मिलकर सबने हाथों में हाथ डाला, और बन कर
लहर बहुत से कीटाणुओं को धो डाला...
याद रखना, पीछे
नहीं है हटना!!
पानी में मचा ऐसा हड़कंप, आ गया हो मानो जैसे भूकम्प...

मोगैम्बो खुश हुआ!!
टूट पड़ो मेरे यारो !!
हा हा हा हा हा हा
गंदा ग्लास !! नहीं यह पानी मत पीयो
रोक सको तो रोक लो
चलो पानी में उधम मचाते हैं! कीटाणुओं को धो डालते हैं!
गुडग गुडग गुडग
चलो दोस्तों पकड़ो उसे!
उई माँ!भाग यहाँ से पानी पागल हो गया है!
श श...

बस्ती वालों को भी नहीं समझ आया...
कि पानी है आखिर इतना क्यों बौखलाया...

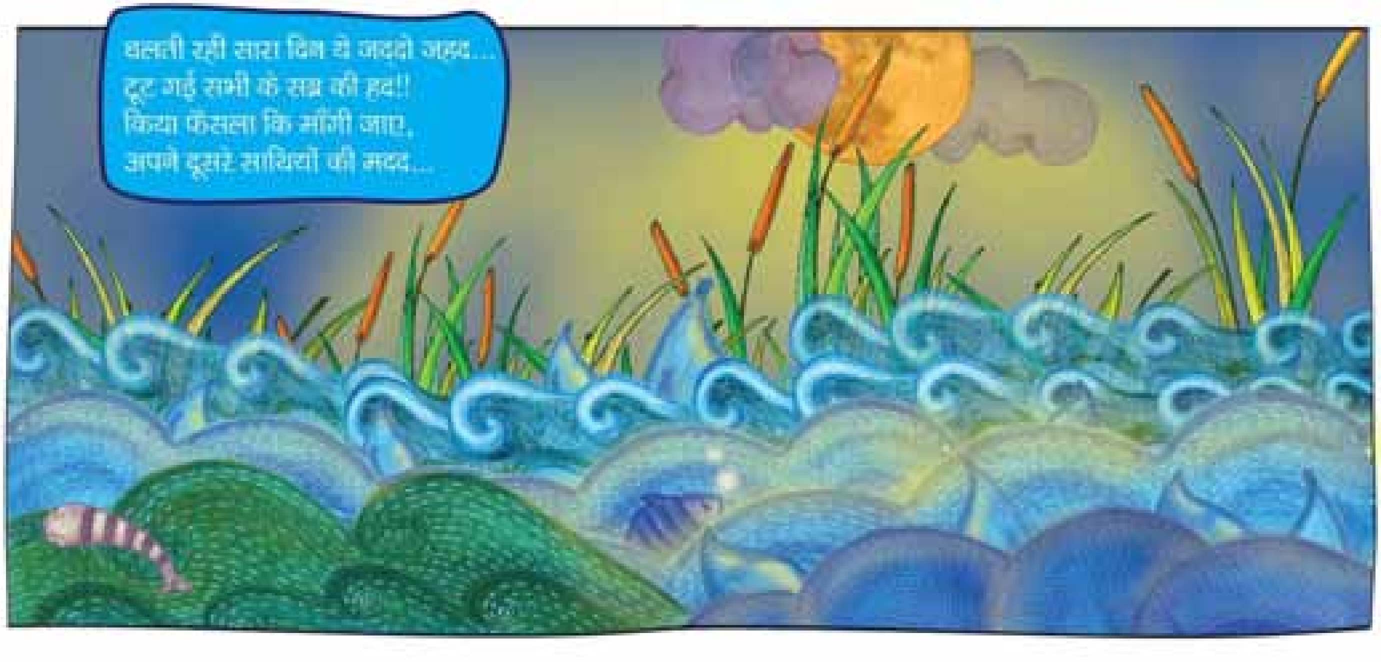
चलती रही सारा दिन ये जद्दो जहद...
टूट गई सभी के सब्र की हद!!
किया फैसला कि माँगी जाए,
अपने दूसरे साथियों की मदद...

उफ बहुत थक गए यार
कीटाणु अभी भी हैं बरकरार
तो क्या किया जाए?
चलो अपने दूसरे साथियों को ढूंढा जाये
वो सब पहुंचे अपने मित्रों के पास... दिलाया उन्हें बस्ती वालों और अपने दर्द का एहसास...
बस्ती का पानी है बहुत गन्दा
उन कीटाणुओं का है बस यही धंधा
तभी उनके मित्रों को याद आया... और उन्होंने ये सुझाया:
चलते हैं बूढ़े बरगद बाबा के पास...
वो हैं हम सब से बड़े, और सदियों से हैं यहाँ खड़े!!
सुनाते हैं उन्हें अपना ये दुखड़ा, शायद वही मिटा दें ये लफड़ा...

सब बूँदें मिलकर पहुँची बाबा के पास,
और बताई सारी अपनी कहानी!!

बस्ती वालों को भी बाबा की ही शरण मिली...
आख़िर क्यों है पानी में इतनी खलबली...?
बूढ़े बाबा ने ध्यान से की उनकी सुनवाई... और सारी कहानी कुछ इस तरह बताई:
तो इसलिए शान्ति है पानी की भंग क्योंकि... बूंदों और किटाणुओं में छिड़ी है जंग
करो तुम सब आपस में ये भागीदारी, कि पानी की सफाई है बस्ती वालों की जिम्मेदारी

तो मैं तुम्हें यह सुझाता हूँ...
सफाई के कुछ नुस्खे बताता हूँ...
*बहुत जरूरी है ये जानना...
पीने से पहले, पानी को हमेशा
छानना या उबालना...
*बात है ये नापी तोली...
20 - 24 लीटर पानी में डालो
क्लोरीन की एक गोली...
*पानी डालो बोतल में, रखो उसे घर की छत पर...
वहाँ आएँगे सूरज राजा...
6 घंटों में पानी कर देंगे बिल्कुल ताजा...
*और हाँ!
काम रहेगा तुम्हारा अधूरा, पानी का
बर्तन अगर न हो साफ सुथरा...
*अधिक जानकारी के लिए अंतिम पेज पर जायें

सुन कर ये विकल्प, सभी बस्ती वालों ने किया संकल्प...
बस्ती है ये हमारी, दूर करेंगे सारी बीमारी...
किया सभी ने बूढ़े बाबा का धन्यवाद, खत्म हुआ सारा विवाद!!
तभी बूंदों को आया याद:
घर भी तो जाना है उस्ताद!!
किया सूरज को याद, और की घर ले जाने की फरियाद... सूरज राजा तुरंत आया, बादलों पर फिर बिठाया, घर का रास्ता दिखलाया...
जाते जाते दे गये वो ये नारा:
कभी न भूलना मेरे यार, सफाई हमेशा बरकरार...

CLEAN-India

क्लीन-इंडिया प्रोग्राम

(कम्युनिटी लेड एनवॉयरनमेंट ऐक्शन नेटवर्क)

डेवलपमेंट ऑल्टरनेटिव्स, 1996 से राष्ट्रव्यापी क्लीन-इंडिया प्रोगाम (कम्युनिटी लेड एनवॉयरनमेंट एक्शन नेटवर्क) के माध्यम से, बच्चों के साथ समुदाय कार्यवाही के लिए एक लाख छात्रों तक पहुंच गया है। क्लीन-इंडिया प्रोग्राम का उद्देश्य पर्यावरण सुधार और कम कार्बन जीवन शैली के लिए, भारतीय शहरों और कस्बों में, स्कूलों और गैर सरकारी संगठनों के एक नेटवर्क के माध्यम से सरकारी, व्यापारिक, शैक्षणिक और अन्य संस्थानों के साथ मिलकर सामुदायिक जिम्मेदारी तैयार करना है।

www.cleanindia.org

सम्पर्क करें

डेवलपमेंट ऑल्टरनेटिव्स

बी-32, तारा क्रिसेण्ट, कुतुब इन्स्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली - 110 016, भारत

दूरभाष: +91-11-2654-4100, 2656-4444, फैक्स: +91-11-2685-1158

ई-मेल: mail@devalt.org, वेबसाइट: www.devalt.org

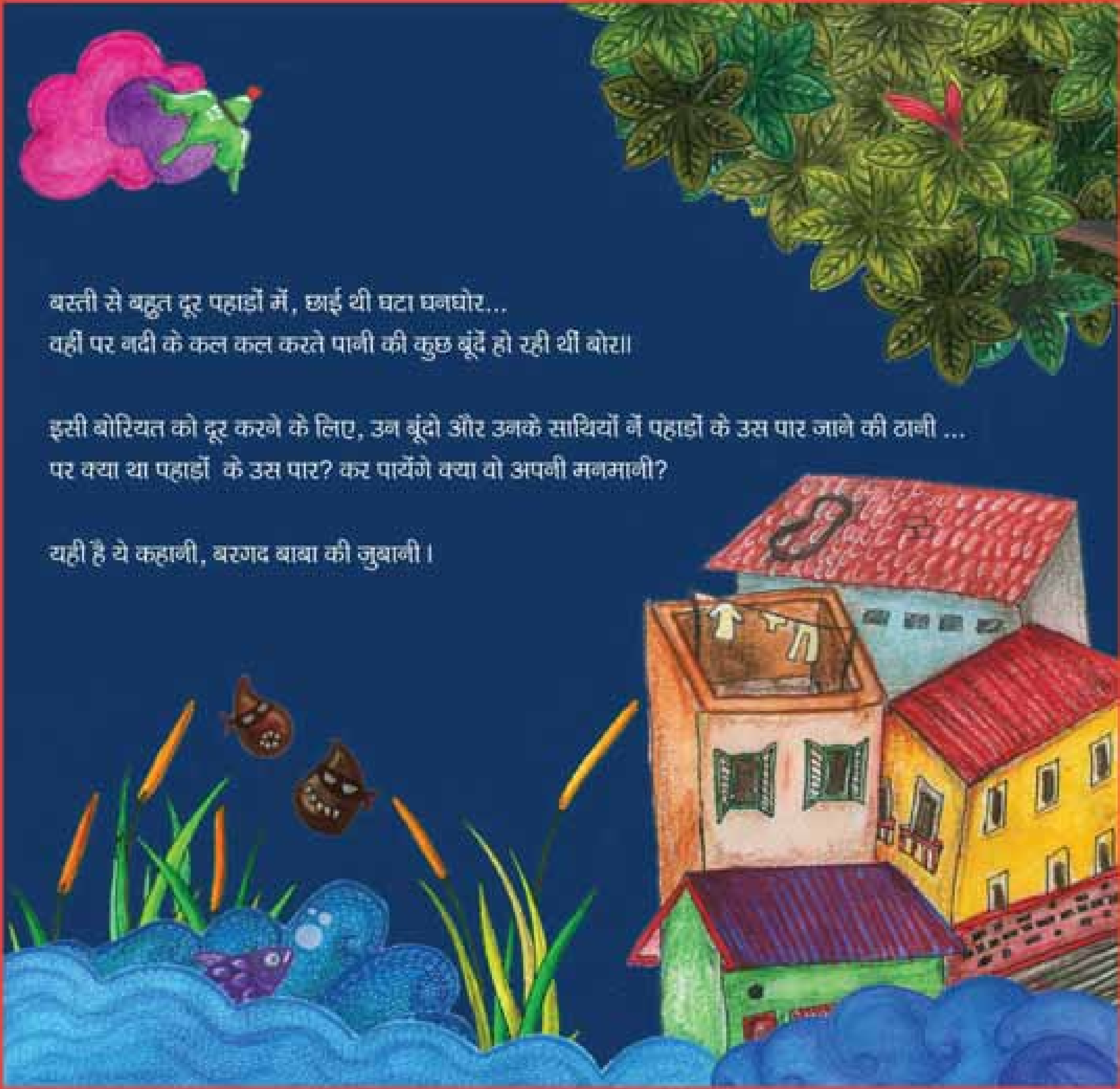

बस्ती से बहुत दूर पहाड़ों में, छाई थी घटा घनघोर...
वहीं पर नदी के कल कल करते पानी की कुछ बूंदें हो रही थीं बोर।।

इसी बोरियत को दूर करने के लिए, उन बूंदो और उनके साथियों ने पहाड़ों के उस पार जाने की ठानी ...
पर क्या था पहाड़ों के उस पार? कर पायेंगे क्या वो अपनी मनमानी?

यही है ये कहानी, बरगद बाबा की ज़ुबानी।